कमलेश्वर भाषा व शिल्प

किसी साहित्यकार की सबसे बड़ी पूंजी उसके विचार व उसकी भाषा होती है। विचारों को वह अपनी भाषा में जीतने सघन रूप में समाहित कर पाता है। उसकी भाषा उतनी ही सशक्त व सुगठित होती है। कमलेश्वर का व्यक्तित्व एक सघन व्यक्तित्व है। एक ही कमलेश्वर में अलग-अलग व्यक्तित्व वाले कमलेश्वर समाहित हुए है। और हर कमलेश्वर का अपना एक अलग व्यक्तित्व व विचार है। लेकिन कमलेश्वर अपने विचारों से अपनी भाषा को अलग नहीं होने देते है। अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े होने के कारण उनके पास विचारों की विविधता है। और हर क्षेत्र में भाषा का अपना अलग प्रारूप व अपना अलग महत्त्व होता है। उसका अपना अलग गठन होता है। जिस भाषा में आप साहित्यकार हो सकते है उस भाषा में आप पत्रकार नहीं हो सकते और जिस भाषा में आप पत्रकार हो सकते है उस भाषा में आप संवाद, पटकथा या फिल्म लेखन नहीं कर सकते है। क्योंकि हर प्रारूप में सम्प्रेषण की चुनौतियाँ अलग होती है। हर विधा में कहने के अपने प्रारूप अलग होते है। कहीं बहुत कम शब्दों में बहुत अधिक कहाँ जाता है तो कहीं बहुत अधिक शब्दों में भी बहुत कम कहाँ जाता है। क्योंकि हर प्रारूप में कहने की अपनी शैली अलग है। और इसके साथ ही अलग-अलग प्रारूप की भाषा को समझना और उसके अनुरूप स्वयं को ढालना एक कठिन साधना है। जिसे कमलेश्वर जी साधते है।

भाषा के वैविध्य को समेटना कमलेश्वर के लिए चुनौती पूर्ण जरूर था। लेकिन कमलेश्वर की भाषाई निपुणता इतनी अच्छी है कि वे इस भाषाई फैलाव व शैलियों की विविधता से युक्त क्षेत्र में अपने आप को साधकर रखते है। भाषा व शैली पर अपनी मजबूत पकड़ रखते है। यही कारण है कि कमलेश्वर के पास एक जादुई भाषा है। जिससे वे अपने पाठकों, दर्शकों को बाधकर रखते है। और यह इस बात का सबूत है कि कमलेश्वर भाषाई संतुलन को साधने में सफल है। इस

कारण वे अपने लेखन के हर प्रारूप में सफल है। भाषा पर मजबूत पकड़ के कारण ही कबीर को भाषा का डिक्टेटर कहा जाता है। तो शिव पूजन सहाय को भाषा का जादूगर कहा गया है। इस तरह कमलेश्वर को यदि हम कहना चाहे तो कह सकते है कि वे भाषा, भाव व शब्द तीनों के अधिकारी है।

भाषा कोई भी साहित्यकार समाज से ही ग्रहण करता है। और समाज से गृहीत भाषा को वह अपने शैली के माध्यम से विशिष्टता प्रदान करता है। विशिष्ट बनाता है। शैली की उपलब्धि लेखक की अपनी उपलब्धि होती है। वह शैलियों का विकास स्वयं करता है। कमलेश्वर के पास अपनी शैली है जिसमे वे प्रतीकात्मक बात ज्यादा करते है। उनकी कोशिश यही रही है कि वे अपनी बात को न तो बहुत सपाट तरीके से रखते है और न ही उसे पेचीदा बनाने की कृतिम कोशिश करते है। यही कारण है कि उनकी भाषा में भावों की तरह एक संतुलन दिखायी पड़ता है। उनकी भाषा में अनावश्यक शब्दों का चमत्कार प्रदर्शन भी कहीं नहीं मिलेगा। क्योंकि इससे अर्थ कही खो सा जाता है। भाव विचार कही दब से जाए है। और लेखन सिर्फ शब्दों का चमत्कार बन कर रह जाए है। कमलेश्वर इससे बचते चलते है। और अपने तरीके से अपनी बात कहते है जिसमे उनके विचार न बेतरतीब उलझे है और न ही सपाट बयानी के शिकार हुए बल्कि स्पष्ट और कोमल तरीके से वे अपनी बातें, अपने विचार व्यक्त करते चलते है।

एक लेखक के लिए बड़ी उपलब्धि यह भी होती कि वह अपने भाषा के कारण पाठक पैदा करे। सरल भाषा में गहरे व बड़े विचार को व्यक्त करना और आसानी से करना एक बड़े साहित्यकार की बड़ी सफलता होती है। कई बार भाषा की जटिलता में भाव ओझल व बोझिल हो जाते है जिसमे पाठक रम नहीं पाता है। उनमें पठनीय अरुचि हो जाती है। कमलेश्वर का लेखन पठनीय रुचि पैदा करने वाला लेखन है। कमलेश्वर की भाषा की सहजता पठनीय रुचि भी पैदा करती है। सुरुचि पैदा करती है। यह कमलेश्वर की भाषाई सफलता है। यह उनकी भाषाई पकड़ है।

कमलेश्वर के पास वैचारिक संतुलन की भाति भाषाई संतुलन भी बेजोड़ है। इस भाषाई संतुलन का कारण यह है कि वे शुरू ही आकाशवाणी से जुड़ जाते है। जहां पर शब्दों की ही साधना होती है। और वहाँ पर शब्दों को बड़ा साधना पड़ता है। शब्दों का चुनाव बड़ी सावधानी बड़ी सतर्कता से करना पड़ता है। अनावश्यक शब्दों से कैसे बचा जाए और कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक प्रभावशाली बात कैसे कही जाए इन सबका कौशल कमलेश्वर आकाशवाणी से सीखते है। यह आकाशवाणी की नौकरी उनके भाषाई कौशल के लिए जैसे सोने पर सुहाग का काम करती है। शब्दों को कहाँ खर्च करना है कहाँ बचना है। इसके प्रति कमलेश्वर बेहद सजग है। इसके साथ ही कहाँ किस शब्द को रखना है, किसी शब्द का मूल्य किस जगह क्या हो सकता है, किसी शब्द को कहा खर्च करना है यह उन्हे बहुत अच्छे से आता है। इन सबका वे बेहद ख्याल रखते है। इसलिए उनके लेखन मे अनावश्यक शब्द नहीं मिलते। इसका दूसरा कारण यह रहा कि वे फिल्म लेखन, रनिंग कमेंट्री, दूरदर्शन के कार्यक्रम व संपादन का काम लगातार करते रहे। जिससे भाषा पर उनकी असाधारण पकड़ हो गई थी। एक तरह से यह उनकी शब्द साधना ही है। जिसके चलते वे भाषा के रग-रग से वाकिफ़ हो जाते है। और यह उनके भाषाई सफलता का राज है।

कमलेश्वर की भाषा की एक खास विशेषता यह है कि वह हर जगह एक जैसे नहीं है। कमलेश्वर का मन लेखन में जहां रमता है। जो भूमि कमलेश्वर की भूमि है। जब वे उस भूमि पर खड़े होते है तो उनकी भाषा में एक जादू सा होता है। वहाँ आप कमलेश्वर के भाषाई जादू के कायल हो जायेगें। कमलेश्वर जब तक इस भावभूमि पर होते है तब तक वे अपने पाठकों को बाधकर रखते है। पाठक उन पर लहालोट हुआ रहता है। पर जहा कहीं उनकी भाषा शिथिल हो जाती है कमलेश्वर वहाँ कथा का विस्तार कर रहे होते है। यह उनकी अनुभूति या उनकी संवेदना का विषय नहीं होता। लेकिन कमलेश्वर जहां अपने अनुभूति, अपने प्रामाणिकता, प्रतिबद्धता की बात कर रहे होते है।

वहाँ भाषा कमलेश्वर की अनुगामिनी है। उनकी अनुचारिणी है। यह कमलेश्वर की भाषायी पकड़ व ताकत है।

कमलेश्वर जिस अर्थ में आधुनिक और शहरी मध्यवर्ग के लेखक है। उस अर्थ में उनकी भाषा भी, भाषा के आधुनिक प्रतिमान लिए व शहरी मध्यवर्ग की भाषा है। आधुनिक व शहरी मध्यवर्ग का उसमें सहज प्रवाह है। इस आधुनिकता व शहरी प्रभाव के चलते भी उनकी भाषा कस्बाई खुश्बू से मुक्त नहीं है बल्कि कस्बाई खुश्बू के जबरदस्त आगोश की भाषा है।

कमलेश्वर अपने बात व्यवहार, अपने विचारों मे मनुष्यतावादी है। इसलिए उनकी भाषा में पण्डिताऊपन नहीं है। भाषाई जटिलता नहीं है। उनकी भाषा आमफ़हम की भाषा है। वे गाँव में भले ही नहीं रहते थे लेकिन उनकी भाषा में उनका गाँव कस्बा जिंदा है। उसमें वह बराबर बना हुआ है। और कमलेश्वर इसे जानबूझ कर बनाए रखा है। क्यों की वे भाषा की ताकत को समझते है।

कमलेश्वर भाषाई बर्ताव में वड़र्थवर्थ के करीब पहुँच जाते है। जैसे वह साहित्य में सामान्य भाषा का हिमायती था। कमलेश्वर बिना हिमायत के ही सामान्य भाषा का व्यवहार करते है। दूसरी बात जो भाषा के संदर्भ में समझ पड़ती है वह यह कि जनसामान्य की भाषा साहित्यिक भाषा को हमेशा से अपदस्थ करती आयी है। इस बात को हम भाषा के विकास मे देख सकते है कि किस तरह से संस्कृत भाषा को जी इतनी समृद्ध थी उसे एक सामान्य जन भाषा पालि कैसे अपदस्त करती है और स्वयं साहित्य के सिंहासन पर सत्तारूढ़ हो जाती है। किन्तु जनता से अत्यधिक दूरी उसे भी जटिल व दुरूह बना देती है फिर उसका भी अपदस्तिकरण होता है। इस तरह से साहित्य के सिंघासन पर सामान्य भाषा आरूढ़ होती रही है और जनता से कटी हुई भाषा हमेशा साहित्य सिंहासन से पदच्युत होती रही है। यह भाषा का विकास है। और यह भाषा का अपना नियम है

कि जो जनता से दूर हुई स्वयं ही मर गई। उसे कोई बचा नहीं पाया। इससे यही ज्ञात होता है कि जो भाषा जनभाषा के जीतने करीब होती है वह उतनी ही लोकप्रिय व लंबे समय तक जीवित रहती है। कमलेश्वर को इस बात का पूरा का पूरा आभास है। इस कारण वे साहित्यिक भाषा व जनसामान्य की भाषा को जोड़े रखते है। यानी उनकी भाषा साहित्यिक भाषा व जनसामान्य की भाषा के मध्य सेतु की तरह है। और यह भाषा की सजगता ही कमलेश्वर के लेखन को और अधिक लोकप्रिय बनाता है। इसी कारण उनका लेखन साहित्यिक पंडितों के बीच व जन सामान्य दोनों के मध्य समान रूप से लोकप्रिय है।

भाषायी जटिलता, दुरूहता, नए-नए भाषायी प्रयोग कमलेश्वर में नहीं है। हा इतना जरूर है कि कमलेश्वर भाषा के विषय में मृत्य विचारों वाले भी नहीं है। भाषा का जो रूप चल रहा है। वह उन्हे स्वीकार है। उसमें वे किसी तरह की अड़चन या अड़ंगा नहीं डालते है। इसलिए उनकी भाषा एक स्वाभाविक भाषा है। उसमे कृत्रिमता नहीं है। यानी उनकी भाषा संस्कृत के कूप जल वाली भाषा नहीं बल्कि बहते नीर की तरह है। भाषा में जो सुपाच्य है वह उन्हे प्रिय है। उसे वे ग्रहण कर लेते है। इससे उन्हे कोई परहेज नहीं है। लेकिन जो सुपाच्च नहीं वह उन्हे स्वीकार भी नहीं है।

कमलेश्वर की भाषा के शब्द भंडार:

कमलेश्वर का शब्द भंडार मिश्रित शब्द भंडार है। उनके भाषा में कई भाषाओं के शब्द घुले-मिले है। लेकिन इसके कारण भाषा में कहीं दुरूहता नहीं है। इसके करण कही भी समझ की कठिनाई नहीं पैदा होती है। यानी शब्दों का चयन करते हुए लेखक सावधान है। यह सावधानी यह, सतर्कता, एक सतर्क लेखक की पहचान है कि वह अपनी भाषा का स्तर क्या रखता है। और उसके प्रति

कितना सचेत व सावधान है। इस बात की शिकायत आप कमलेश्वर के साहित्य से नहीं कर सकते है।

तत्सम शब्दावली

कमलेश्वर के भाषा में तत्सम शब्दों की प्रधानता है। कुछ प्रमुख तत्सम शब्द इस प्रकार से है। वक्षस्थल, वनस्थली, कर्तव्य-च्युत, प्रतिकार, विमुख, उज्ज्वल, प्रतिध्वनि, संशयात्मक, विश्वास, तदात्म, सभापतित्व, महत्त्वकांक्षा, युद्धस्थल, आमंत्रित, मंत्रमुग्ध, प्रतिबंध, पूजाभाव, कृपणता, भावुकता, अविश्वास, आकृति, दार्शनिक, प्राकृतिक, आशीर्वाद, पवित्र, अप्रत्याशित, परमात्मा, सतर्क, स्वाभिमान, भाग्यवान, अंजलि, जर्जर, करुण-रुदन, यौवन, निर्लिप्त, संन्यासी, व्याकुल, अनुभूति, कल्पना, अनिश्चित, आत्मग्लानि, निष्काम, निरपेक्ष, निर्वासित, अवज्ञा, कुत्सित, वात्सल्य, स्निग्धता, स्पंदन, आस्तिक, प्रवेशाधिकार, कलुषित, कुविचार, आत्मीय, निस्तेज इत्यादि इस तरह से कमलेश्वर अपने भाषा में तत्सम शब्दावली का प्रयोग बहुतायत मात्रा में करते है।

तद्भव शब्दावली

तत्सम शब्दावली के अतिरिक्त कमलेश्वर के लेखन में तद्भव शब्दावली भी अत्यधिक मात्रा में प्रयुक्त हुई है। कुछ प्रमुख तद्भव शब्द इस तरह से है। जिजमान, दरशन, सपना, गरदन, मनवा, रपट, बरस, पुरजा, वरदी, परसराम, पोसन, सूरज, महराज, लेसन्स, परतीत, गारद, करम, सुरिंदर, बुलाउआ, घर-गिरस्ती इस तरह के तद्भव शब्दावली का प्रयोग कमलेश्वर अपने लेखन में करते है।

देशज शब्दावली

कमलेश्वर के पास देशज शब्दों का भंडार है। वे गाँव कस्बाई आदमी थे। जिस कारण उनके भाषा में वे शब्द अनायास भी अपनी जगह बना लेते है। और वे लिखते भी जन सामान्य की ही भाषा में है और जनसामान्य के लिए ही लिख रहे है। तो उस भाषा का प्रयोग कमलेश्वर ने खूब किया। जैसे चिकिर-मिकिर, बकूरता, हड़फूटन, जरिया, लपककर, अँधियारे, मुसकरा, डागदारी, खरचना, खरखरती, मठियारीन, कुलबोरन, खड़खड़ाती, पचड़ा, गूदड़, बरोसी, ठठेसना, खोंखट, सुनगुन, बदा, नाहक इत्यादि सहज देशज शब्दों का प्रयोग कमलेश्वर बड़े ही सहज रूप से करते है। कमलेश्वर के देशज हिन्दी में देश के अलग-अलग हिस्सों की हिन्दी का नमूना मिल जाता है। और वह हिन्दी किसी कामगार की होगी, किसी मजदूर की होगी, किसी नौकर की होगी, होटल में किसी साफ-सफाई करने वाले की होगी। ऐसे सामान्य लोगों की हिन्दी कमलेश्वर के यहाँ खूब है या यूं कहें कि इनको जहां भी मौका मिल इस तरह की हिन्दी का वे प्रयोग जरूर करते है। इससे उदाहरण कमलेश्वर के साहित्य में काफी मात्रा में है।

विदेशी अरबी-फारसी व अंगरेजी शब्दावली

अरबी-फारसी व उर्दू के शब्द

हिन्दी भाषा के साथ हमारे सामान्य बोलचाल में अरबी-फारसी व उर्दू के शब्द ऐसे घुले-मिले है जैसे दूध में पानी। दूध और पानी अलग होने पर ही अलग है, वरना पानी दूध में बदल जाता है। ठीक उसी तरह हिन्दी से अलग होने पर ही अरबी-फारसी व उर्दू में फर्क नजर आता है वरना हिन्दी के सतह मिलने पर वह हिंदीमय हो जाती है। हिन्दी अपने आप में उसे पचा लेती है। उसे अपने अनुरूप बना लेती है। अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाल लेती है। इस कारण ये लेखन या बोलचाल में सहज हो जाते है। इनका प्रयोग कोई अनायास ही हो जाता है। कमलेश्वर के लेखन में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्द इस प्रकार से है जैसे- आदमी, दिल, अकल, शाही, हरम, काफिले,

हिफाजत, काफिर, जायका, मंजर, कमीज, फरमाइश, दस्तक, बेजान, हिसाब, पहरेदार, मेहरबान, मरहूम, गुलदस्ते, निशान, बदसूरत, मुनासिब, निगाहें, बेहोश, इल्जाम, कालिख, लिबास, असलियत, बेफ्रीक, नौकरीपेशा, जहर, जुल्म, बदकिस्मत, खातिर, नजदीक, मशक्कत, मोहताज, बरदाश्त, शिकस्त, तश्तरियाँ, कमीज, कागज, बेखौफ, अफसर, फिरकी, खामोश, नमकहराम, गुनाह, बगैर, इलाके, रुख, मायूस, मसविदे, कतरने, सरासर, मरघट, हकीकत, सिफारिश, जोखिम, कायनात, सियाह, मुखालफत, मुल्क, हमशक्ल, तारीक, बदसलूकी, मर्तबा इत्यादि बहुत से शब्द कमलेश्वर अरबी-फारसी व उर्दू के शब्दों का प्रयोग वे अपने लेखन में करते है। इन शब्दों के प्रयोग को देखकर कमलेश्वर के भाषा संबंधी विचार हमें हिन्दुस्तानी भाषा के पक्ष में लगता है। यानि कमलेश्वर हिन्दुस्तानी भाषा के हिमायती साहित्यकार है।

अंगरेजी शब्दों का प्रयोग

अंगरेजी शब्दों का प्रयोग कमलेश्वर अपने लेखन में करते है। यह उनके लिए कोई वर्जित शब्द नहीं है, बल्कि भाषा के सहज प्रवाह में आए हुए शब्द है। जैसे पुलिस, कामरेड, यूनिवर्सिटी, रिपोर्ट, कटिंग्स, सिविल, नेलपालिश, सेंट्रल, पैंट, ड्यूटी, मशीन, मैनेजर, कार्निस, आपरेशन, कंपाउडर, इंच, कंपीटीशन, डीयर, मिडवाइफ, वर्कशाप, सेक्टर, टैंक, रिटायर, सिस्टम इत्यादि शब्दों के साथ और भी बहुत से शब्दों का प्रयोग वे सहज रूप से करते है।

कमलेश्वर 1988-89 के करीब से लगभग 2000 के बीच में विदेशी पृष्ठभूमि की कहानियाँ लिखी। कमलेश्वर की ये कहानियाँ भी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ है। उन कहानियों में कहीं-कहीं लंबे संवाद में अंगरेजी बहुतायत मात्रा में प्रयुक्त हुई है जैसे-

“पासपोर्ट ! उसे लगभग न देखते रिसेप्शन वाले ने पासपोर्ट तलब किया।

उसने पासपोर्ट देकर राहत की साँस ली, पर तभी रसेप्शननिस्ट ने कहाँ- सारी...नो रूम !

पर अभी तो आपने पंप स्टेशन वाले को...

नो आर्गूमेंट...नो रूम...

मुझे मालूम है...रूम तो बहुत-से खाली पड़े हैं !

सारी, नो आर्गूमेंट...नो रूम...

क्या यह रंगभेद है ? वह चीखा था...

डोंट शाउट...नो रूम।"1

इसके साथ ही कमलेश्वर न केवल हिन्दी में सरलता से प्रचलित विदेशी शब्दों का इस्तेमाल करते है बल्कि कुछ विदेशी शब्दों के साथ कभी-कभी विदेशी वाक्यों का भी सफल प्रयोग किया है। और ऐसा प्रयोग उन्होंने अपनी विदेशी पृष्ठभूमि पर लिखित कहानियों में करते है। जैसे कोहरा कहानी उनकी विदेशी पृष्ठभूमि की कहानी है। जिसमे लेखक ने फ्रेंच भाषा का प्रयोग किया है। जैसे- 'रेतो अला नारमेल' तषूरका, कम्यून आदि।

इसी तरह से सफेद सड़क कहानी में वे जर्मन भाषा का प्रयोग करते जैसे- "नीख्त दिमोक्रातिक दोहचलैंद...निख्त काफे...बेलकम आस्त्रीय!" वेनिस..2 आदि।

इस तरह कमलेश्वर के लेखन में प्रयुक्त भाषा व शब्दों का चयन कथ्य, परिवेश व पात्रोचित व उसके अनुरूप है। उसमें कहीं भी किसी तरह की अतिशयोक्ति या अक्रमबद्धता या अनुचित, अशोभित नहीं हुई है। की भाषा में कमलेश्वर की भाषा की कसावट व उसकी सामर्थ्य का अनुमान हमे वहाँ अधिक होता है जहां कमलेश्वर पूरे वेग के साथ लिखते है। जहां वे पूरे कथ्य को संवेदनाओं

से युक्त करते है। भाषा की सहजता व सजगता एक बड़े साहित्यकार की बड़ी उपलब्धि भी होती है। कमलेश्वर इस बड़ी उपलब्धि को अर्जित करने में शिखर पर है। यह सब कमलेश्वर की भाषा की खास प्रवृत्तियाँ है। जो उनकी भाषा को सहज, सरल, सफल व बोधगम्य बनाती है।

द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग

कमलेश्वर की भाषा में द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग बहुतायत मात्रा में हुआ है। कहीं-कहीं यह प्रयोग खटकने भी लगता है। या खटकने की सीमा तक पहुँच गया है। ऐसा हम कह सकते है। किसी-किसी पृष्ठ पर यह प्रयोग अठारह से लेकर बीस-बाईस की संख्या तक पहुँच गया है। इसके साथ ही पर पृष्ठ आठ से दस द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग इनके लेखन में सामान्य बात है। द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग अक्सर भावों की सघनता या संवेदना के कारण होता है। जैसे: अच्छा-अच्छा, दौड़े-दौड़े, धीरे-धीरे काट-काट, सदा-सदा, अलग-अलग, दूर-दूर, साथ-साथ, फीका-फीका, मंद-मंद, बार-बार, उड़ती-उड़ती, बिलख-बिलख, बोलते-बोलते, फफक-फफक, सहलाती-सहलाती, चिथड़ा-चिथड़ा, धीरे-धीरे, खड़े-खड़े, पीला-पीला, लंबी-लंबी, झिझकते-झिझकते, काली-काली, मोटा-मोटा, सुन-सुन, ठहरा-ठहरा, काला-काला, रोज-रोज, मुरझा-मुरझा, लंबे-लंबे, नया-नया, चलते-चलते, खाते-खाते, अभी-अभी, बड़ी-बड़ी, देखते-देखते, भाय-भाय, नन्हे-नन्हे, तरह-तरह, काटते-काटते, द्विरुक्ति शब्द भाषा की शोभा कारक शब्द है। द्विरुक्ति शब्द अक्सर क्रिया बोधक, विशेषण बोधक व काल बोधक शब्द होते है। इनके प्रयोग से भाषा की शोभा तो बढ़ती ही बढ़ती से इनके प्रयोग से भावों उत्कर्ष भी आता है।

ध्वनिमूलक शब्द टप...टप...टप, टन...टन, तड़...तड़...तड़, शू...शू, ठक...ठक जैसे ध्वनिमूलक शब्दों का प्रयोग भी कमलेश्वर करते है।

कमलेश्वर की भाषा में परिवेश इस कदर घुला-मिला है कि हम उसे अलगा नहीं सकते। भाषा परिवेश से उपजति है। और उसका प्रभाव उस परिवेश से आने वाले व्यक्ति पर स्थायी रूप से बना रहता है। कमलेश्वर पर भी यह प्रभाव है। और इसका प्रयोग वे अपने पात्रों पर भी करते है। इनके पात्र इससे मुक्त नहीं है। पात्र और परिवेश का संतुलन इस कदर संतुलित है कि अगर पढ़ें लिखे व्यक्तियों की बात करते है तो उसकी भाषा का कमलेश्वर को पूरा ख्याल है कि वह हिंगलिश का ही प्रयोग ज्यादा करता है। यह मध्यवर्गीय पढ़ें-लिखे व्यक्ति की प्रवृति भी है। तो इसका ध्यान रखते हुए भाषा का वे प्रयोग करते है। इस तरह का प्रयोग वे 'नंगा आदमी' कहानी में बखूबी करते है। रवि एक खूब पढ़ा-लिखा नवयुवक है किन्तु बेरोजगार है। इस कहानी में कमलेश्वर ने अंगरेजी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है।

दीर्घीकरण की प्रवृत्ति

व्याकरणिक दृष्टि से दीर्घीकरण को एक दोष के रूप में चिन्हित किया जाता है। लेकिन साहित्य में दीर्घीकरण की प्रवृति काफी पाई जाती है। दीर्घीकरण की प्रवृति से भाषा में एक अपनेपन का बोध भी होता है। कई बार साहित्यकार इस बोध को बचाने के लिए भी इस तरह के शब्दों का प्रयोग करता है। कस्बाई व आंचलिक भाषा की यह एक खास प्रवृति भी है। इसका प्रयोग बहुतायत रूप से इसी भाषा में अधिक मिलता है। शरम, बरस, मरन, गरम, दरशन, सुरिंदर, कुरसी, खतम बेशरम, तसवीर, मुसकराते, अरथी, भरती इत्यादि यह कमलेश्वर की भाषा की खास प्रवृति है जो उनके लेखन में आदि से लेकर इति तक सतत विद्यमान है। इसे हम उनकी भाषा की स्थायी प्रवृति कह सकते है।

मुहावरा व लोकोक्ति

मुहावरा या लोकोक्ति भाषा में चार चाँद लगाते है, तो भावबोध को सहज, व्यंजक व गंभीर भी बनाते है। बड़ी सी बड़ी बात को कम से कम व आसान तरीके से कहना मुहावरों व लोकोक्तियों की अपनी ताकत होती है। इसके साथ ही इनके प्रयोग से भाषा में सौन्दर्य भी आता है। और मुहावरों व लोकोक्तियों से भाषा लोक के करीब भी जाती है। हमारे लोक अनुभव व लोक जीवन से जुड़ती है। लोक की खुश्बू, मिट्टी की महक, लोक जीवन के अनुभव इन मुहावरों व लोकोक्तियों के द्वारा साहित्य में सम्मिलित होते है। मुझे ऐसा लगता है मुहावरे व लोकोक्ति साहित्य में सीमेंट का काम करते है। यानि विचार व भाषा को मजबूती से जोड़ने का कार्य मुहावरे व लोकोक्तियाँ ही करती है। इस रूप में वह सीमेंट की तरह है। लोकोक्ति व मुहवारें में हमारी शदियों की ज्ञान-विज्ञान की विरासत भी खजाने की तरह सुरक्षित रहती है। ये हमारे ज्ञान-विज्ञान का साधन भी हुआ करती है। इसके साथ ही भाषा में चमत्कार, प्रभाव व प्रवाह लाने के लिए लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।

मुहावरों व लोकोक्तियों से बनी भाषा प्रभावशाली भाषा होती है। और हर लेखक इसका प्रयोग अपनी क्षमता अनुसार करता है। पात्रो के अनुभव अनुसार करता है। कान लगाना, आँखों में करकना, नाक कटवाना, छाती पर साप लोटना, घिग्घी बधना, कुहराम मचान, सांप सूंघना, रक्त पानी होना, मुंह ताकना, नाक पर जूं न रेंगना, गड़े मुर्दे उखाड़ना, नक्कारखाने में तूती इत्यादि लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग कमलेश्वर अपने लेखन में प्रचुर मात्रा में करते है।

प्रतीकात्मकता व व्यंजनात्मकता

प्रतीकात्मकत व व्यंजनात्मकता कमलेश्वर की भाषा की अन्यतम विशेषता है। प्रतीकात्मकता यदि हमें लोक के साथ प्रकृति से जोड़ती है तो व्यंजनात्मकता हमें ध्वन्यात्मकता से जोड़ती है। काम शब्दों में अधिक बात या मौन होते हुए भी बहुत कुछ कहना और किसी कथ्य को प्रत्यक्ष कहने

की अपेक्षा अप्रत्यक्ष व अलग ढंग से के साथ प्रभावी रूप में कहना व्यंजनात्मकता की खास प्रवृति है। इस बात को हम इस अंश से समझ सकते है- "जिंदगी के दूसरे पहर में यदि सूरज न चमका तो दोपहरी कैसी ? बादल आते हैं, फट जाते हैं, परंतु ये भूरे धुँधले बादल तो उसे हटते नजर ही नहीं आते। अगर उसका अपना दूसरा सूरज हो तो कैसा रहे।"3 यह एक ठहरी हुई जिंदगी की बात लेखक कह रहा है। पर यह बात बादलों व सूरज मे कैसे लिपटकर रह गई है। जिससे इसकी प्रतीकात्मकता व व्यंजनात्मकता दोनों बेजोड़ है। इस तरह के प्रतीकात्मक व व्यंजनापूर्ण प्रयोग कमलेश्वर अपने पूरे लेखन मे करते है। इस प्रयोग के वे सिद्धहस्त लेखक है।

कमलेश्वर की भाषा की एक और खास प्रवृति यह है कि वे हिन्दी के उस रूप का भी बड़ा ही सुंदर प्रयोग किया है जो अहिंदी भाषियों की हिन्दी या फिर बच्चों की तोतली भाषा का रात, औरत और गुनाह कहानी में लिली कहती है "मेरे पेट में लेडियो है चाचा जी, पल छिनेमा के गीत नहीं गाता !"...ये छोला है, ये बंदूत और मोटल भी मेले पास है। ओल...ओल ये गुलिया...ये उसका गद्दा। और दिताऊ...।"4 "देखिए ये मेली पूछी (पुसी) का बिस्तल है, चाची ने इसमें लुई भली है औल ये उसके लात (रात) में ओलने का लेछमी लिहाफ।"5 "इदर किसी को नईं जानता !"...इदर बैठो... इदर आराम से बैठो...अबी पता करेगें।"...अबी पता करेगा। घबराता काहे को है !"6 (मुंबाइयाँ हिन्दी)

चित्रात्मकता

चित्रात्मकता भाषा व साहित्य की अन्यतम प्रवृति है। चित्रात्मक भाषा भावों को सहज प्रस्तुत करने में समर्थ होती है। किसी दृश्य को सामने हूबहू प्रस्तुत करने में समर्थ भाषा को चित्रात्मक भाषा कहते है। कमलेश्वर के लेखन में चित्रों या दृश्यों की उपस्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण उपस्थिति है। एक उदाहरण हम देखेंगे जैसे उनके उपन्यास एक सड़क सत्तावन गालियां में वे इसका बड़ा ही सुंदर

प्रयोग किया है। "बाजा मास्टर ने हारमोनियम पर रखे हुए फूलों को सामने रखी रामायण की पोथी पर बिखरा दिया और कुंजियों पर मकड़े की टांगों की तरह उँगलियाँ टीका दी। पैरों में हरकत हुई और धुन फुट पड़ी- रघुपति राघव राजाराम..।"7 चित्रात्मकता से भाषा व भाव में दृश्य के साथ प्रभाव काफी समृद्ध है। और इस तरह से उनके सम्पूर्ण लेखन में इस तरह की चित्रात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

इसके साथ ही कमलेश्वर की भाषा में जो प्रवाह है। वह बेजोड़ है। जब वे लय में होते है तो भाषा व भाव दोनों इतने सधे व इतने चुस्त होते है कि इनमें से न किसी शब्द को हटाया जा सकता है न भाव को छिपाया जा सकता है। एक साहित्यकार की भाषा की ताकत, भाषा की सामर्थ ही उसे ताकतवर बनती है। उसके साहित्य को, उसके लिखे हो सार्थक भाषा ही प्रदान करती है। कमलेश्वर की प्रवाहमायी भाषा का एक उदाहरण इस तरह से है- "इन जालिमों के अत्याचार मिटाने को तुम्हें संगठित होना पड़ेगा, अपने हक के लिए तुम्हें लड़ना पड़ेगा...तुम्हारी क्या औकात, क्या हस्ती है इसे तुम नहीं जानते। इनसे लड़ने को, अपनी मजदूरी पूरी लेने को, अपने सड़ते बीवी-बच्चों, उनकी भूखी आत्माओं को शांत करने के लिए, भर पेट अन्न पाने के लिए तुम्हें खून-पसीना एक करना होगा, एक साथ सबको खड़ा होना चाहिए..सबकी एक आवाज हो, एक मांग हो। अपनी ताकत को पहचानों ! कल ही एक रिक्शा मजदूर यूनियन बनाओं। परसों से सारे शहर में हड़ताल कर दो।"8 यह भाषा में जो एक प्रवाह है। यह लगता है कि बयानबाजी की भाषा है। भाषण की भाषा जैसे लोच, क्रमबद्धता है। यह कमलेश्वर की जादुई भाषा है। यह भाषा की बांधकर रखती है। यह भाषा कमलेश्वर की बड़ी ताकत है। और यह कमलेश्वर की प्रारम्भिक कहानियों की भाषा है। यानी कि कमलेश्वर की भाषाई पकड़ उनके आरंभिक लेखन से ही है।

कमलेश्वर के उपन्यासों की भाषा की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए डॉ. सुरेश सिन्हा का अभिमत देखा जा सकता है। वे लिखते है कि "उनके उपन्यासों की प्रमुख विशिष्टता उनकी साफ-सुथरी भाषा का

प्रवाह एवं यथार्थता है। चित्रात्मक भाषा सजोने एवं वातावरण का यथार्थ निर्माण करने में वे पूर्ण सफल रहे है।"9

कमलेश्वर अपने लेखन की भांति अपने भाषा को भी किसी बद्ध प्रणाली की भाषा नहीं बनाया है। बल्कि उनकी भाषा उन्मुक्त भाषा है। जहां जिस तरह के पात्र व परिवेश है, वहाँ उसी तरह की भाषा का प्रयोग कमलेश्वर जी करते है। उनकी भाषा सीमा बद्ध नहीं है। यही कारण है कि इनकी भाषा में विविधता है। भाषा के कई रूप इनके सम्पूर्ण लेखन में है। यह इनके भाषा संबंधी कुशलता की भी परिचायक है। भाषा संबंधी कमलेश्वर के विचार बहुत ही स्पष्ट है। वे लिखते है कि- "कहानी या कथाकार को भाषाओं की सीमा में बद्ध नहीं रखा जा सका हैं। आज का लेखक भाषा को अपनी मजबूरी मान सकता हैं पर चिंतन को अपनी भाषा तक सीमित रखने से सहमत नहीं हैं- इसलिए आज वह कोई भी रचना, जो अपनी भाषा में लिखी जाती हैं, वह वैचारिक स्तर पर अपनी भाषा की नही रह जाती, बल्कि भारतीय सोच की विस्तृत दिशाएं उजागर करती हैं।"10

कमलेश्वर की भाषा में कस्बाई पुट का प्रभाव देखा जाता है। पात्रों की अनुकूल भाषा का चयन साहित्य में एक महत्वपूर्ण पहलू होता है। पात्र के परिवेश से जुड़ी हुई भाषा अधिक सामर्थ्य व शक्तिशाली रूप में अपने परिवेश बोध को, परिस्थितियों को सशक्त तरीके से अभिव्यक्त कर पाती है। कमलेश्वर की भाषायी सामर्थ्य यह हैं कि उनकी भाषा अपने हर पात्र व परिस्थिति को जोड़ कर रखती हैं। और उनके लेखन में कहीं बच्चों की तोतली या चुलबुलाती हुई भाषा का प्रयोग हुआ है, तो कहीं होटल या अन्य जगह काम करने वाले ऐसे सामान्य व्यक्ति की भाषा का भी प्रयोग हुआ है जो टूटी हुई हिन्दी जानता या बोलता है। और कहीं सामान्य से सामान्य व्यक्ति की भाषा का भी प्रयोग कमलेश्वर अपने लेखन में करते है।

कमलेश्वर की भाषा मे एक खास प्रवृत्ति यह भी है कि उनकी भाषा का रूप वह रूप है जिसका प्रयोग न सिर्फ हिन्दी भाषी क्षेत्र मे होता है, बल्कि उनकी हिन्दी वह हिन्दी है जिसका प्रयोग अहिंदी भाषी क्षेत्र के लोग भी आसानी से कर लेते है। अग्रेजी शब्दों का सहज प्रयोग यह सामान्य बात है। इसका कारण यह भी था की कमलेश्वर जिस पेशे से जुड़े हुए थे, वहाँ इस तरह की भाषा की अपनी जरूरत व मांग थी। जिसका प्रभाव कमलेश्वर पर होना स्वाभाविक है। बनावटी नहीं बल्कि सहज है।

भाषा संबंधी कमलेश्वर के विचार बड़े ही स्पष्ट है। भाषा व लेखन के कार्यों से जीवनभर जुड़े होने के नाते भी उनकी भाषा बड़ी सामर्थशाली है। भाषा पर विचार करते हुए वे लिखते है कि "भावुकता या मनोरंजकता मनोवैज्ञानिक सत्याभास अब सम्प्रेषणीयता के सेतु नहीं है। भाषा का चमत्कार, मुहावरों की छटा, या शैली की विशिष्टता अब कहानी के शृंगार नहीं हैं-शैली अब एक आरोपित रूपवादी मान्यता नहीं रह गई है। अब हर कहानी का कथ्य ही अपनी शैली निर्धारित करता है। पत्र शैली, डायरी शैली, संस्मरण शैली जैसी बनावटी और झूठे रूपवाद से मुक्ति प्राप्त कर यथार्थ को आमने-सामने देख सकने की चुनौती बेहद महत्त्वपूर्ण हो गई है।"11

भाषा भावों का अनुगमन करती है। आप देखेगें कि प्रेम में पगी भाषा रससिक्त, सहज व सरल भाषा होती है। किन्तु किन्तु उदंडता, झगड़े-टंटे की भाषा यदि आप देखेगें तो उसमें कर्कशता, कठोरता ही प्रधान होती है। यह होता है भावों का अनुगमन करती हुई भाषा। और भावों के अनुगमन से ही उसका स्वरूप बदल गया। उसकी अभिव्यक्ति क्षमता बदल गई। उसकी रूप रचना बदल गई। इसी तरह से तनाव, अकेलेपन व संघर्ष की भाषा भी अलग होती है। अकेलेपन की ऊब, तनाव का दबाव व संघर्ष की कठोरता उस भाषा में कहीं न कहीं घुला-मिला जरूर रहेगा।

साहित्य मे शिल्प का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिल्प ही साहित्य को आकार देता है। शिल्प हीन होने पर साहित्य साहित्य नहीं बल्कि आम संवाद की तरह बातचीत का रूप ही बनकर रह जाएगा। यानी शिल्प साहित्य को गढ़ता है। साहित्य को मजता है। उसे तरसता है। उसे स्वरूप देता है। यानी साहित्य का जो नियोजन है वह साहित्य का शिल्प है। और यह नियोजन ही साहित्य के सफलता-असफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो साहित्य जितना प्रभावकारी होता है उसका शिल्प उतना ही गठा हुआ होता है। उतना ही जुस्त होता है। नई कहानी के शिल्प को लेकर प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह जी लिखते है कि "शिल्प को लेकर नये प्रयोग करने की प्रवृति आज के कवियों की तरह कहानीकारों में भी है और कविता की तरह कुछ कहानियाँ भी केवल प्रयोग के लिए लिखी गयी हैं। डायरी या पत्र-शैली तो काफी पुरानी है या यों कहें कि पुरानी पड़ गयी है। इसलिए प्रयोगशील कहानीकारों ने नये शिल्प का आश्रय लिया है, जैसे कहानी के किसी अत्यंत पुराने रूप का, जो अब अप्रचलित हो, पुनरुद्धार करना भी एक तरह का नयापन ही है और किस्सा तोता-मैना या इस तरह के किसी अन्य किस्से की शैली में नये कहानीकारों ने कहानियाँ लिखी है।"12 कमलेश्वर की प्रथम प्रसिद्ध कहानी 'राजा निरबंसिया' इसी किस्सागों शैली पर ही केंद्रित है। जो महत्त्वपूर्ण व सफल कहानी है। इसी क्रम में नामवर जी कहते है कि "कहानी-शिल्प संबंधी आलोचनाओं ने कहानी की जीवनी शक्ति का अपहरण कर उसे निर्जीव शिल्प ही नहीं बनाया है बल्कि उस शिल्प को विभिन्न अवयवों में काटकर बाँट दिया है। लिहाजा, हम कहानी को कथानक, चरित्र, वातावरण, भावनात्मक प्रभाव, विषयवस्तु आदि अलग-अलग अवयवों के रूप में देखने के अभ्यस्त हो गये है।"13

कमलेश्वर जिस साहित्यिक रूप में अपनी बात रखते है, उस साहित्यिक रूप के भाषा व शिल्प की गहरी जानकारी व मजबूत पकड़ रखते है। यानी वे अपनी बात जिस रूप में कहना चाहते है। उस रूप में अपनी बात आसानी से और साधे रूप में कह जाते है। उनके यहाँ शब्द विचलन नहीं है।

अनावश्यक शब्दों का बोझ नहीं है। अर्थ के सहज गति में अवरोध उत्पन्न करने वाले गूढ शब्दों से लेखक लगातार बचने रहने का उद्योग किया है। भाषा दुरूहता से लगातार बची हुई और भावों के अनुरूप अपना रूप ग्रहण करती चलती है। जिससे इनकी भाषा में मुहावरों व लोकोक्तियों का का सहज प्रयोग, बिम्ब योजना मिलेगी, प्रतीक योजना मिलेगी, भाषा का चित्रात्मक रूप मिलेगा, कहीं भावपरक व विचारोत्तेजक भाषा का रूप मिलेगा, कहीं सूक्ति परक रूप मिलेगा, यह कमलेश्वर की भाषिक प्रवृतियाँ है।

संदर्भ ग्रंथ

1 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.520

2 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.528

3 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.67

4 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.94

5 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.95

6 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.117

7 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.12

8 कमलेश्वर समग्र कहानियाँ राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2018 पृ.30

9 अरुणेन्द्र सिंह राठौर स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी लघु उपन्यासों में युगचेतना प्रकाशन संस्करण 2010 पृ.94

10 कमलेश्वर गर्दिश के दिन राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 1980 भूमिका से

11 कमलेश्वर नई कहानी की भूमिका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.19

12 नामवर सिंह कहानी: नयी कहानी प्रकाशन लोक भारती संस्करण 2009 पृ.13

13 नामवर सिंह कहानी: नयी कहानी प्रकाशन लोक भारती संस्करण 2009 पृ.13